चन्दा

दिन में चन्दा रे तू
फीका लगता है।
पर बिन चीनी के
दूध सरीखा मीठा
लगता है।

प्रभात

पूरनमाशी की रात
जंगल में
जब कभी चाँदनी
बरसती है
पत्तों पर
टिकलियाँ-सी बजती हैं।

गुलज़ार

चाँद भाई

चाँद भाई
कहाँ रहते हो आजकल
हमारी दिल्ली में तो तुम्हारा पता नहीं चलता
मुम्बई गया तो वहाँ भी नहीं दिखे
न्यूयॉर्क में भी नज़र नहीं आए

पता ही नहीं चलता
कि तुम उगते और डूबते कब हो
घटते और बढ़ते कब हो

महानगरों की रोशनी के आगे फीके पड़ गए क्या?
बड़ी-बड़ी बिल्डिंगों के आगे बौने हो गए क्या?
लाखों साल की उमर और यह हाल?
सूरज भी तो है
उसकी तरफ देखो
उससे कुछ सीखो
वरना हमीं से सीख लो
हम तो अब तुम्हारे यहाँ भी आ पहुँचे!

विष्णु नागर

चाँद की आदतें

चाँद की कुछ आदतें हैं।
एक तो वह पूर्णिमा के दिन बड़ा-सा निकल आता है
बड़ा नकली (शायद असल वही हो)।
दूसरी यह, नीम की सूखी टहनियों से लटककर
टँगा रहता है (अजब चमगादड़ी आदत है!)
तथा यह तीसरी भी बहुत उम्दा है
कि मस्ज़िदों की मिनारों और गुम्बद की पिछाड़ी से
ज़रा मुड़िया उठाकर मुँह बिराता है हमें!
यह चाँद! इसकी आदतें कब ठीक होंगी।

रघुवीर सहाय